शास्त्री (B.A.) तृतीय वर्ष

हिन्दी साहित्य- चतुर्थ पत्र

काव्यशास्त्र

1. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले छात्र शास्त्र की परंपरा को जानते हैं अतः हिन्दी में काव्यशास्त्र को पढना उनके लिए सहायक सिद्ध होता है।
2. इस पत्र के माध्यम से छात्र रस, अलंकार, छंद, आदि के अंगों, उनके प्रयोग, पहचान तथा उसके आस्वाद पक्ष को विस्तार से समझ सकेंगे।
3. गुण किसे कहते हैं, उनकी पहचान कैसे की जाती है तथा काव्यशास्त्र के आचार्यों ने साहित्य के लिए उन्हें कितना आवश्क माना है।
4. साहित्य के लिए शब्द शक्तियाँ किस रूप में कार्य करती हैं, अर्थ परिवर्तन में शब्द शक्तियों की क्या भूमिका है। छात्र इन सभी बातों से अवगत होंगे।
5. साथ ही काव्य के भेद, उपभेद, घटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा मुक्तक काव्यों के स्वरूप को पहचान पाएँगे।

हिन्दी आलोचना

1. इस पत्र के अन्तर्गत संस्कृत काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना को समानांतर रखकर अध्ययन किया जाता है।
2. हिन्दी आलोचना के स्वरूप, विकास तथा संस्कृत काव्यशास्त्र से उसके संबंध का अध्ययन किया जाता है।
3. काव्यशास्त्र तथा आलोचना के बीच अंतर स्पष्ट करने वाले कौन-से तत्त्व होते हैं।
4. हिन्दी आलोचना की नवीन अवधारणाओं का क्या अर्थ है।
5. संस्कृत काव्यशास्त्र में लोकमंगल, बिंब, प्रतीक, मिथक, फैंटेसी आदि का वर्णन कहाँ और किस रूप में हुआ है। इन अवधारणाओं के प्राचीन स्रोत क्या हैं। साहित्य के लिए ये कितने महत्वपूर्ण हैं।
6. इस पत्र के माध्यम से छात्र आलोचना की संपूर्ण अवधारणाओं को समझ सकेंगे।